dakshin

96 सीखें, जो साल मछुआरों के साथ किए काम से मिलीं

पिछले 16 साल से हम मछुआरों के साथ उनके समुदाय और समुद्र के इकोसिस्टम के बीच की कठिनाइयों को समझने और सुधारने के लिए क़रीबी से काम कर रहे हैं। भारत में मत्स्य क्षेत्र जितना विविध है, उतना ही ज़रूरी भी। लेकिन आज यह कई बड़ी चुनौतियों से जूझ रहा है - जैसे घटते संसाधन (रिसोर्स), असमान सरकारी नीतियाँ और क्लाइमेट चेंज।

जो कुछ हमने इन सालों में सीखा, अब उसे आप सबके साथ बांटने का समय आ गया है| हमारे मछली मैन, "खाने के लिए बचाओ" अभियान (#KhaneKeLiyeBachao) के वर्चुअल मैस्कॉट हैं। वह आपके लिए हमारे ज़मीनी अनुभवों से निकली 9 खास बातें लेकर आए हैं| यह बातें हमारी वेबसाइट पर ब्लॉग के रूप में भी शेयर की गई हैं। इनसे भारत के मत्स्य क्षेत्र और तटीय इलाकों के लिए एक ज़्यादा टिकाऊ (सस्टेनेबल) और सबको साथ लेकर चलने वाला भविष्य बनाने में मदद मिलेगी।

हम ने क्या सीखा - कुछ झलकियां:

#1 मत्स्य क्षेत्र में एक ही तरह का हल या समाधान हर जगह लागू नहीं हो सकता। हर जगह की अपनी अलग चुनौतियाँ हैं, लेकिन कई बार जो सोच या रणनीति एक जगह काम करती है, वो दूसरी जगह भी मददगार साबित हो सकती है।

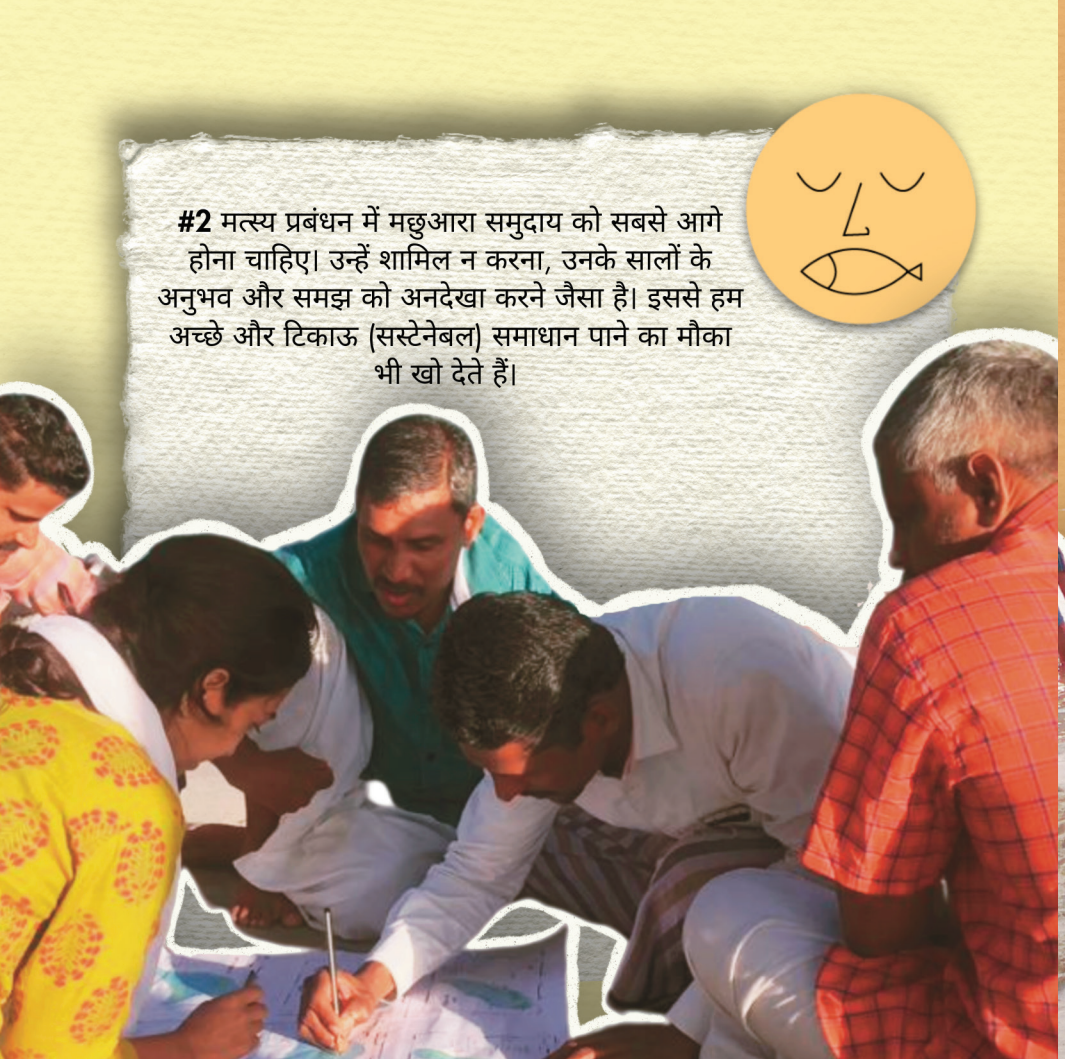

#2 मत्स्य प्रबंधन में मछुआरा समुदाय को सबसे आगे होना चाहिए। उन्हें शामिल न करना, उनके सालों के अनुभव और समझ को अनदेखा करने जैसा है। इससे हम अच्छे और टिकाऊ (सस्टेनेबल) समाधान पाने का मौका भी खो देते हैं।

#3 मछुआरों की सोच या ज़रूरतें संरक्षण (कांसेर्वेशन) के काम में जुड़े लोगों से अलग हो सकती हैं, लेकिन यही अंतर बातचीत और समझ बढ़ाने के लिए अहम ज़रिया बन सकते है।

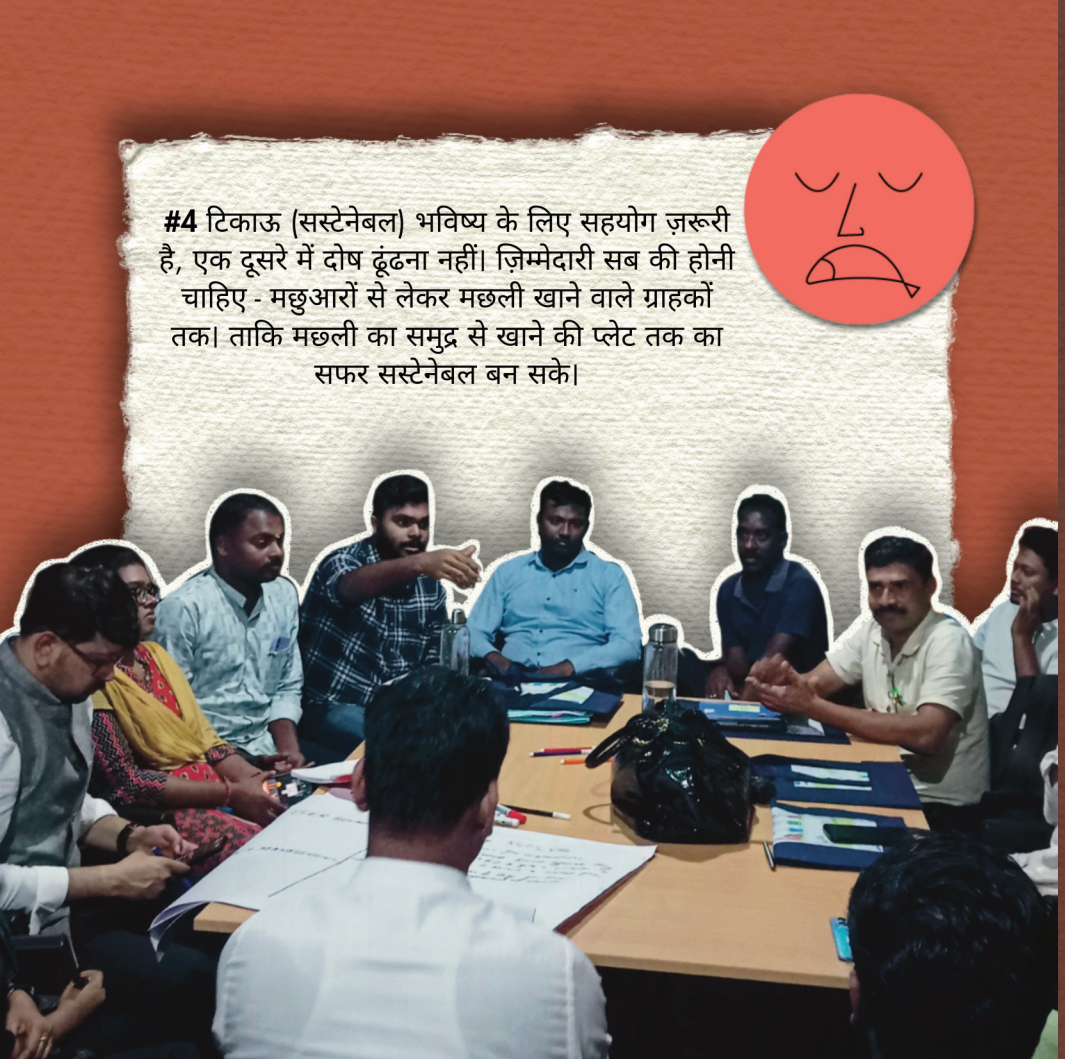

#4 टिकाऊ (सस्टेनेबल) भविष्य के लिए सहयोग ज़रूरी है, एक दूसरे में दोष ढूंढना नहीं। ज़िम्मेदारी सब की होनी चाहिए - मछुआरों से लेकर मछली खाने वाले ग्राहकों तक। ताकि मछली का समुद्र से खाने की प्लेट तक का सफर सस्टेनेबल बन सके।

#5 किसी भी जगह का स्थानीय या लोकल ज्ञान उतना ही मूल्यवान है जितना कि वैज्ञानिक डाटा। आखिर कार, अपने घर को घर में रहने वाले लोगों से अच्छा और कौन जान सकता है ?

#6 मत्स्य क्षेत्र की रीढ़ महिलाएँ हैं, लेकिन अक्सर उनकी भूमिका अनदेखी रह जाती है | उन्हें अक्सर सब्सिडी, संसाधनों (रिसोर्सेज़) और निर्णय प्रक्रिया जैसे क्षेत्रों में असमानता का सामना करना पड़ता है। अगर उनकी भूमिका को सही तरह से समझा और दर्ज किया जाए, तो नीतियाँ सच में बराबरी और न्याय पर आधारित हो सकती हैं।

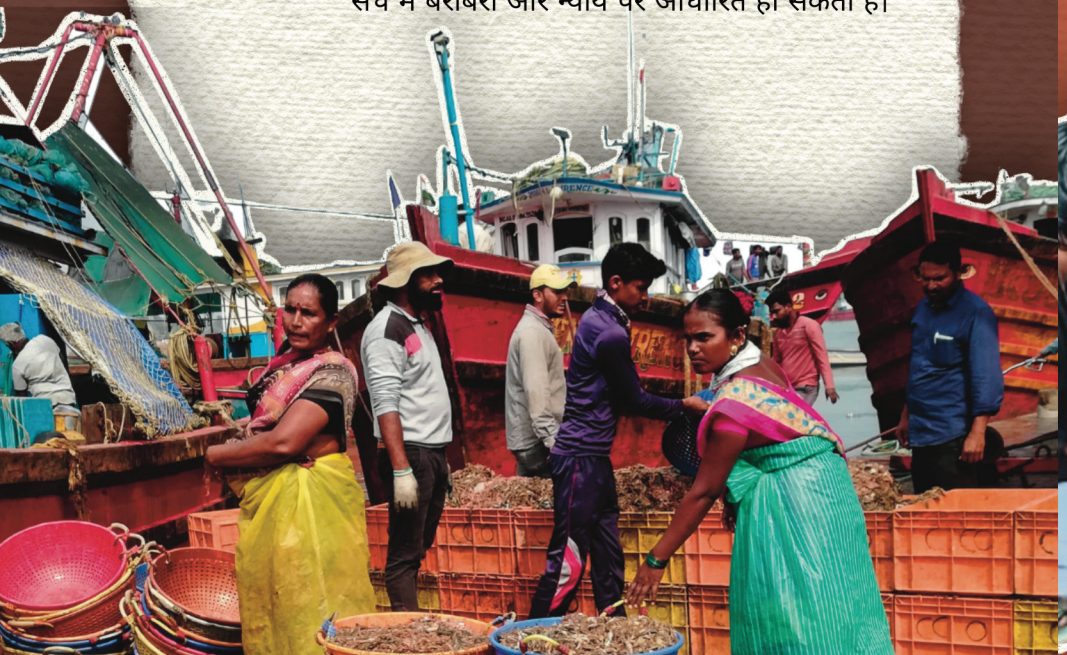

#7 हमारे समुद्र और मत्स्य क्षेत्र का भविष्य मज़बूत करने में युवाओं की भागेदारी बहुत ज़रूरी है। वे न सिर्फ़ तुरंत कदम उठाने की ताकत रखते हैं, बल्कि अपने आस-पास के लोगों को भी पर्यावरण के प्रति जागरूक करते हैं।

#8 संरक्षण के काम को सफलता से आगे बढ़ाने का काम सिर्फ प्राधिकारी या प्राधिकरण तक सीमित नहीं है। सामाज और समुदायों को सक्षम बनाकर, उन्हें नेतृत्व या निर्णय प्रक्रिया में शामिल करना ही संरक्षण प्रयासों को ज़्यादा मज़बूत, ज़मीनी और सफल बनाता है।

#9 मत्स्य प्रबंधन को सफल और टिकाऊ (सस्टेनेबल) बनाने के लिए लम्बे जुडाव और लगन की ज़रूरत है। इससे विश्वास और आपसी सहयोग का माहौल बनता है, जो भविष्य में एकजुट हो कर अच्छे प्रबंधन को आगे बढ़ाने के लिए बहुत ज़रूरी है।

Khane ke liye bachao

आइए,

#KhaneKeLiyeBachao!

की मुहीम का हिस्सा बनिए!

ADDRESS
2203, 8th Main Rd, MCECHS Layout, D Block, Sahakar Nagar,
Bengaluru, Karnataka 560092

PHONE
+91 80 42113509

EMAIL
info@dakshin.org

dakshin